# भारतीय संगीत

**नोट :– भारतीय संगीत विषय के अन्तर्गत शास्त्रीय गायन, वादन एवं तबला, पखावज, अलग–अलग विषय है। इनमें से विद्यार्थी शास्त्रीय गायन या वादन के अन्तर्गत दिये गये वाद्यो (सितार, सारंगी, दिलरूबा, इसराज, वीणा, वायलिन, जलतरंग, सरोद, बांसुरी एवं शहनाई) में से कोई एक वाद्य अथवा ताल वाद्य (तबला, पखावज) में से कोई एक वाद्य, संगीत विषय के अंतर्गत ले सकता है।**

## भारतीय संगीत – गायन वादन

### कक्षा– 12 वीं

**समय –3 घण्टे**

**पूर्णांक : 50 अंक** **सैद्धांतिक** **इकाई वार अंक विभाजन**

| क्र. | इकाई | | विषय वस्तु | अंक |
|---|---|---|---|---|
| 1. | 1 इकाई | | परिभाषायें – आलाप, तान, कण, मींड, गमक जोड़, झाला, शुद्ध, छायालग एवं संकीर्ण राग, पूर्व एवं उत्तर राग। | 5 |
| 2. | 2 इकाई | (अ) | बाइस श्रुतियों पर आधुनिक पद्धति से स्वर स्थापना। | 8 |
| | | (ब) | राग समय सिद्धांत एवं संधि प्रकाश राग। | |
| 3. | 3 इकाई | | भातखंडे एवं पलुस्कर स्वर लिपि पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन। | 5 |
| 4. | 4 इकाई | | संगीतज्ञों की जीवनी–11वीं के पाठ्यक्रम के साथ ही स्वामी हरिदास, उस्ताद इनायत खां, उस्ताद अलाउद्दीन खां। (मैहर वाले) | 5 |
| 5. | 5 इकाई | | निम्न रागों का दोहा सहित वर्णन – आसावरी, भैरवी, विहाग, भूपाली, भीमपलासी, केदार। | 5 |
| 6. | 6 इकाई | | निम्न गायन शैलियों का परिचय – तराना, ध्रुपद, धमार तथा कक्षा 11वीं में वर्णित गायन शैलियों की पुनरावृत्ति। | 5 |
| 7. | 7 इकाई | | निम्नलिखित तालों की स्थाई (ठाह) एवं दुगुन में बोल चिन्ह सहित लिखने का अभ्यास – रूपक, तीव्रा, चौताल, तिलवाड़ा, धमार। | 5 |
| 8. | 8 इकाई | | अ) अपने वाद्य अथवा तानपुरा वाद्य का संपूर्ण वर्णन।<br>ब) संगीत के संबंधित निबंध। | 12 |
| | | | **योग** | **50** |

**प्रायोगिक –** **50 अंक**

1. 20 अलंकारों का पुर्नअभ्यास। — 10
2. सैद्धांतिक, पाठ्यक्रम के रागों में प्रत्येक में आरोह, अवरोह, पकड़, लक्षणगीत और द्रुत ख्याल। — 25
   (आसावरी, भैरवी, बिहाग, भूपाली, भीमपलासी, केदार)
   कोई 2 द्रुत ख्याल 4 तान सहित
   कोई 2 विलम्बित ख्याल दो आलाप व दो तान सहित।
   विलम्बित ख्याल वाले राग छोड़कर अन्य रागों में एक तराना एक ध्रुपद या धमार।
3. राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत, एक भजन, एक प्रादेशिक लोक गीत, एक देशभक्ति गीत, एक सरस्वती वन्दना या स्वागत गीत। — 5

| | | |
|---|---|---|
| 4. | ध्वनि सुनकर स्वर,, राग व ताल पहिचानना। | 5 |
| 5. | कक्षा 11वीं और 12वीं में सम्मिलित तालों की हाथ ताली से ठाह व दुगुन करना। (प्रदर्शित करना) | 5 |

**विशेष –** 1. गायन के परीक्षार्थी को तानपुरा अथवा हारमोनियम में सिर्फ स्वर लगाकर तबले के साथ गाना होगा।

2. तंत्र वाद्य के विद्यार्थी द्रुत व विलम्बित ख्याल के स्थान पर मसीतखानी और रजाखनी गत समझें।

**संदर्भित ग्रंथ – सैद्धांतिक –** 1) संगीत विशारद, 2) राग परिचय भाग 1, 2

**प्रायोगिक –** 1) हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति की क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 1, 2, 3, 4

00

## भारतीय संगीत वादन
## तन्त्र वाद्य संगीत
## कक्षा XII

**नोट– निम्नांकित में से कोई एक वाद्य परीक्षा हेतु निर्धारित है। सितार, सारंगी, दिलरुबा, इसराज, वायलिन, जलतरंग, सरोद, वीणा, बांसुरी, एवं शहनाई।**

**सैध्दांतिक** – 50

कंठ संगीत में आई परिभाषाओ के अतिरिक्त निम्न परिभाषाये।–

1. मींड़, सूत, घसीट, कण, गत– (मसीत खानी, रजाखानी)
2. अपने वाद्य का सम्पूर्ण अंग वर्णन (परिचय)।

**प्रायोगिक** – 50

1. कंठ संगीत (गायन) के ही राग (ताने, आलाप स्वरविस्तार सहित) इसमें भी (वादन में) बजाना है।
2. **गज वाद्य–** (वायलिन, सारंगी, दिलरुबा, इसराज)

**तंत्र वाद्य –** (सितार, वीणा, सरोद) **सुषिर वाद्य –** वांसुरी व शहनाई एवं जलतरंग आदि मे पद्धति के अनुसार गज, कोण अथवा मिजराव से बजने वाले गत, तोड़ा (ताने) अंग से अभ्यास करेंगे।

---

## भारतीय संगीत – ताल वाद्य
## तबला/परवावज
## कक्षा XII

**सैध्दांतिक** – 50

1) सभी तालों के ठेको की ठाह, दुगुन, तिगुन, चौगुन में लिखना।
2) तबला अथवा पखावज के अंगो का ज्ञान और दोनो का इतिहास व मिलाने की विधि व अभ्यास।
3) कक्षा XI मे आई हुई सभी परिभाषाओं की जानकारी व पुनरावृत्ति।

**प्रायोगिक** – 50

1) ताल अक्षर एवं पटाक्षरों को बजाकर बताना। पॉच सरल कायदे अथवा परन टुकड़े एवं मुखड़ो सहित निम्नलिखित तालों का अभ्यास त्रिताल, चौताल, कहरवा, तीव्रा।
2) लय ज्ञान– दुगुन, तिगुन, चौगुन लयो को ताली देते हुये अंक बोल कर दिखाना।
3) तबला अथवा परवावज मिलाने का ज्ञान व गीतों के साथ संगत करने का साधारण ज्ञान।
4) ताल लिपि के लिखे छोटे लेखो को देखकर बजाने की योग्यता।
5) तीन ताल मे एक पेशकार, दो कायदे पलटे सहित। एक ताल मे एक पेशकार, दो कायदे पलटे सहित। नये ताल आडा चार ताल, तीव्रा, रुपक, धमार, झपताल ताली देकर बोलना व बजाना।

   संदर्भित ग्रंथ – 1) ताल परिचय भाग 1, 2